हमारे लिए बड़ी चुनौती है हाफिज सईद को घेरना

पाकिस्तान की आंतरिक राजनीति और उसके भू-राजनीतिक समीकरणों ने जमात उद दावा के प्रमुख हाफिज सईद को जो हैसियत दी है उसे महज बयानबाजी से रोकना संभव नहीं। इसी राजनीति का प्रभाव है कि वह अपने को आतंकी के दाग से बरी कराने के लिए संयुक्त राष्ट्र के दरवाजे तक पहुंच गया है। सईद ने रिहाई के बाद जब कश्मीर के लिए गोलबंदी का दावा किया तो भारत ने मुंबई हमले के लिए उसे जिम्मेदार बताते हुए विरोध किया और अमेरिकी विदेश विभाग ने भी उसे सैकड़ों बेगुनाहों की हत्या के लिए उत्तरदायी कहते हुए गिरफ्तार किए जाने की मांग की। इसके बावजूद अगर पाकिस्तान अपनी अदालत के फैसले का हवाला दे रहा है और अमेरिका कुछ दिन पहले ही पेंटागन के दबाव में पाकिस्तान के लिए धन जारी कर रहा है तो लगता है कि सईद के पीछे पाकिस्तानी सरकार और वहां का कट्टरपंथी समाज खड़ा है और अमेरिका जबानी जमा खर्च से ज्यादा कुछ करने का इरादा नहीं रखता। हाफिज पहले लश्कर-ए-तैयबा चलाता था और उस पर पाबंदी के बाद उसने जमात उद दावा बना लिया। लश्कर का नाम 26/11 के मुंबई हमले में प्रमुखता से आया था और उसी के बाद दिसंबर 2008 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने उसे आतंकी घोषित किया। हालांकि, अमेरिका उसी साल मई में ही सईद को आतंकी घोषित कर चुका था। उस पर एक करोड़ डॉलर का इनाम भी रखा। तब भारत के राजनय ने वैश्विक स्तर पर पाकिस्तान पर भारी दबाव बनाया था। भारत उस दबाव को आगे जारी रख नहीं पाया। ब्रिक्स सम्मेलन की ओर से पाकिस्तानी आतंकियों के विरुद्ध जारी घोषणा के बावजूद अगर पाकिस्तान सईद को रिहा करने की हिम्मत कर रहा है तो स्पष्ट है कि चीन आतंक की महज जबानी आलोचना करना चाहता है। वह जानता है कि मिल्ली मुस्लिम लीग बनाकर राजनीति में उतरने की तैयारी कर चुके आतंकियों के लिए सईद कितना जरूरी है और यह पूरी राजनीति पाकिस्तान के शासक वर्ग को कितनी अनुकूल लगती है। अमेरिका भी पाकिस्तान की उपेक्षा नहीं कर सकता, क्योंकि अफगानिस्तान ही नहीं ईरान के साथ उसके तनाव में उसकी बड़ी जरूरत है। स्पष्ट है कि सईद को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अहमियत दिलाकर पाकिस्तान कश्मीर मसले को और उछालना चाहता है। यह गंभीर राजनयिक चुनौती है, जिसके लिए हमें ठोस प्रयास करने होंगे।

उत्सवों के माध्यम से भीतरी बदलाव लाएं

जीने की राह
पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

शरीर का हर अंग स्वार्थी है। वैसे यह सही है कि शरीर मन की तुलना में ईमानदार है। मन की बेईमानी के तो हर पल नए-नए किस्से हैं। लेकिन, यही मन जब शरीर पर आक्रमण करता है तो हर अंग को बेईमान, स्वार्थी, लुटेरा और विलासी बना देता है। कान को प्रशंसा सुनना पसंद है। आंखें वो सारे दृश्य देखना चाहती हैं जो उन्हें नहीं देखना चाहिए। इसी तरह बाकी अंगों से भी मन वो सारे काम करवाना चाहता है, जो मर्यादा में उन अंगों को नहीं करना चाहिए। कुल मिलाकर आज मनुष्य का जीवन मन से संचालित हो रहा है और इसका परिणाम अपराध के रूप में सामने आता है। शरीर से होने वाले और शरीर के प्रति किए जाने वाले अपराधों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। खासकर महिलाओं के प्रति जो अपराध हो रहे हैं उनमें उम्र की सीमा ही नहीं रही। स्त्री देह के साथ पुरुष के अपराध मन ने ऐसी मर्यादा तोड़ी कि अब ढाई साल की बच्ची से लेकर 80 बरस की स्त्री पर भी शारीरिक आक्रमण होने लगे हैं। जब सबकुछ शरीर पर केंद्रित हो जाए तो ऐसे दिन तो आने ही थे। हमारे देश में जितने उत्सव और त्योहार मनाए जाते हैं, सबके पीछे संदेश होता है नैतिक जीवनशैली। अब सामूहिक रूप से प्रयास करने होंगे कि हर उत्सव-त्योहार पर उस पीढ़ी को यह संदेश दिया जाए कि शरीर के साथ अनैतिक काम न करें। न अपने, न दूसरे के। मनुष्य को भीतर से बदलने के लिए जो-जो भी प्रयास किए जाएं उनमें उत्सव और त्योहारों को जोड़ते हुए इनके संदेश को योजनाबद्ध तरीके से भारतीय मन तक पहुंचाया जाए।

जीने की राह कॉलम पं. विजयशंकर मेहता जी की आवाज में मोबाइल पर सुनने के लिए टाइप करें JKR और भेजें 9200001164 पर

कम सरकार, अधिकतम शासन का पहला सबूत

संदर्भ... ऑनलाइन सरकारी सेवाओं व राज्यों में स्पर्धा से देश में बिज़नेस करना अधिक आसान हुआ

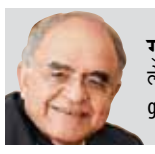

गुरचरण दास
लेखक और स्तंभकार
gurcharandas@gmail.com

ठंड का यह मौसम हमारे लिए अब तक असंतोष भरा ही रहा है। हम पूरे पश्चिमोत्तर को घेर लाने वाले विषैले स्मॉग, घटती आर्थिक वृद्धि, नौकरियां जाने और जटिल जीएसटी से निपटने में लगे हैं। लेकिन, आखिरकार एक अच्छी खबर आई है। बिज़नेस करने की आसानी के मामले में भारत विश्व बैंक की वैश्विक रैंकिंग में 30 स्थान ऊंचा उठा है। सारे दस मानकों पर सुधार हुआ है। कोई अन्य देश ऐसा नहीं कर सका है। इस रिपोर्ट को आईडीएफसी/नीति आयोग के 3,200 से ज्यादा कंपनियों के एंटरप्राइज सर्वे पर आधारित अध्ययन के साथ पढ़ने से इस भरोसे का ठोस आधार मिलता है कि आखिरकार जमीन पर सांस्थानिक सुधार शुरू हो गए हैं। यह मोदी के 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' के वादे का पहला सबूत है। मूडी ने भी भारत की रेटिंग बढ़ाकर यह रेखांकित किया है कि केवल संस्थागत सुधारों से ही भारत पूरी क्षमता का दोहन कर सकेगा।

भारत की कहानी निजी क्षेत्र की कामयाबी और सार्वजनिक क्षेत्र की नाकामी की कहानी है। भारत इसलिए कामयाब हो रहा है, क्योंकि इसके लोग आत्म-निर्भर, महत्वाकांक्षी, किफायती और जोखिम लेने वाले हैं। दुर्भाग्य से हमारी लालफीताशाही और नौकरशाही सर्वाधिक नौकरियां पैदा करने वाले छोटे और मध्यम उद्यमियों का उत्साह खत्म कर देती हैं। कानून-व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य और जल-आपूर्ति जैसी सेवाओं में सरकार की जरूरत होती है, वहां यह बहुत खराब काम करती है। जहां इसकी जरूरत नहीं है, वहां यह जरूरत से ज्यादा सक्रिय है। विश्व बैंक 15 साल से इस ओर ध्यान दिलाता रहा है पर भारत की हर सरकार ने बिज़नेस करने की आसानी की उपेक्षा की। विश्व बैंक के मुताबिक बिज़नेस करने की आसानी को गंभीरता से लेने वाली यह पहली भारतीय सरकार है। जब मोदी ने 142 से उठकर 50वें स्थान पर आने का लक्ष्य रखा तो हर किसी ने इसे दिवास्वप्न माना लेकिन, अब यह हासिल करने लायक लगता है। शासन और नागरिकों का आदान-प्रदान ऑनलाइन लाना हमारी सफलता का मुख्य कारण है। दूसरा कारण राज्यों में स्पर्धा की भावना पैदा करना है। एक बार जीएसटी और दिवालिया कानून की दिक्कतें दूर हो जाएं तो भारत की रेटिंग में और सुधार होगा। विश्व बैंक अधिकारियों के अनुसार पहली बार नौकरशाही लोगों के फीडबैक पर ध्यान दे रही है। निचले स्तर की नौकरशाही का रवैया आखिरकार बदलने लगा है। वित्त मंत्रालय के अधिकारियों ने कबूला है कि उन्होंने जीएसटी प्रशासन में कई गलतियां की हैं और वे संशोधन कर रहे हैं ताकि यह लोगों के अधिक अनुकूल बन जाए।

राज्यों की असेसमेंट रिपोर्ट में आंध्र/तेलंगाना पहले स्थान पर है और उसके बाद गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश हैं। दिल्ली, केरल, असम, हिमाचल और तमिलनाडु सबसे खराब प्रदर्शन वाले राज्य हैं। आईडीएफसी रिपोर्ट ने पुष्टि की है कि बिज़नेस करने की आसानी में सुधार करने वाले राज्यों को ऊंची आर्थिक वृद्धि का पुरस्कार मिला है। राज्य इस रैंकिंग का इस्तेमाल निवेशक, कंपनियां और नौकरियां आकर्षित करने के लिए कर रहे हैं। भारतीय न्यायपालिका सबसे कमजोर कड़ी पाई गई। अनुबंधों को लागू करने में लगने वाले वक्त के मामले में भारत अब भी सबसे निचले स्तर वाले देशों में है। खरीदार और विक्रेता के बीच विवाद के निराकरण पर बिज़नेस निर्णायक रूप से निर्भर है। लेकिन, भारत में अब भी कमर्शियल ट्रेनिंग प्राप्त जजों वाली जिला वाणिज्यिक अदालतों का अभाव है। न ही हम जजों को सुनवाई के पहले दस्तावेज ऑनलाइन पढ़ने की अनुमति देते हैं वरना फैसले जल्दी होने लगें। अनुबंध को लागू करने में चीन में भारत की तुलना में दहाई वक्त ही लगता है।

बिज़नेस करने की आसानी भ्रष्टाचार से लड़ने वाली बड़ी ताकत है। अण्णा हजारे और अरविंद केजरीवाल लोकपाल के विचार से इतने प्रभावित थे कि उन्हें अहसास ही नहीं हुआ कि बिज़नेस करने की आसानी भ्रष्टाचार हटाने में कहीं बड़ा योगदान दे सकती है। भ्रष्टाचार मलेरिया की तरह है। इससे रोकने के लिए पानी भरे गड्ढे खत्म करने होते हैं। लोकपाल कुनैन की गोली जैसा था जिसे आप बीमार पड़ने पर लेते हैं। भ्रष्टाचारियों को पकड़ने की बजाय भ्रष्टाचार रोकना बेहतर है। कोई अचरज नहीं कि बिज़नेस करने में आसानी वाले शीर्ष देशों में बिल्कुल नहीं या न के बराबर भ्रष्टाचार है। लेकिन, उनके यहां लोकपाल जैसा ओम्बुड्समैन होता है, ताकि उच्च अधिकारियों को जवाबदेह बनाया जा सके।

बिज़नेस करने की आसानी से आम आदमी की ज़िंदगी में सुधार हो सकता है। दिल्ली नगर निगम ने निर्माण की अनुमति जल्दी देने के लिए जो प्रक्रियागत बदलाव किया, उसी से जन्म प्रमाण-पत्र मिलने के दिन भी घट गए। दिल्ली में ड्राइविंग लाइसेंस में बिना कोई लेन-देन के एक घंटा लगता है।

सौ की रैंकिंग के साथ भारत को अब भी लंबा रास्ता तय करना है। आईडीएफसी रिपोर्ट ने इरादे और हक़ीकत में फर्क को रेखांकित किया है। ज्यादातर आंत्रप्रेन्योर नहीं जानते कि उनके राज्य में एक ही खिड़की से मंजूरी मिल जाती है। रोजगार पैदा करने वाले क्षेत्रों को अब भी भ्रष्ट लेबर इंस्पेक्टरों का सामना करना पड़ता है। भू-अधिग्रहण लालफीताशाही में फंसा है। जैसे ही सरकार को राज्यसभा में बहुमत मिले वह श्रम और भू-अधिग्रहण संबंधी लंबित विधेयक पारित करे। यदि अफसरों को समय पर मंजूरी देने और विवाद निपटाने के लिए प्रोत्साहित व पुरस्कृत किया जाए तो रेटिंग और सुधरेगी। मोदी ने वादा किया है कि अगले कार्यकाल में वे प्रशासनिक सुधार लाएंगे। कल्पना कीजिए कि यदि हमने 1991 में बिज़नेस करने को आसान बनाया होता! तब भारत आज की तुलना में बहुत कम भ्रष्टाचार के साथ दोगुना समृद्ध होता। भारत के समाजवादी युग ने सामाजिक न्याय के साथ आर्थिक वृद्धि का वादा किया था पर दोनों में से कुछ नहीं दिया।

जब शेक्सपीयर ने 'रिचर्ड थर्ड' में कहा- 'हमारे असंतोष की इस शीत ऋतु को यॉर्क के इस पुत्र ने अब भव्य ग्रीष्म में बदल दिया है' तो वे कहना चाहते थे कि दुख का वक्त गुजर चुका है। मैं कामना करता हूं कि ऐसा हम अपने देश के लिए कह सकें। जब हमारी आर्थिक वृद्धि दर 8 फीसदी को पार करेगी और नौकरियां थोक में आएगी, तभी सच्चे अर्थों में 'अच्छे दिन' आएंगे। इस बीच, यह एक बहुत बड़ा कदम है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं।)

जीवनशैली में भी वैश्विक और स्थानीय का संतुलन चाहिए

अंडर -30
करंट अफेयर्स पर 30 से कम उम्र के युवाओं की सोच

कैलाश बिश्नोई, 24
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Facebook/Kailash.manju.75

हाल ही में 'इंडिया हेल्थ ऑफ द नेशन्स स्टैट्स' नाम से जारी रिपोर्ट में चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक पूरे देश में 1990 की तुलना में जीवनशैली से जुड़ीं बीमारियां यानी गैर-संक्रामक रोगों से जुड़े मामलों की संख्या 2016 तक करीब दोगुनी हो गई थीं। इस रिपोर्ट को भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने तैयार किया है।

इसी तरह विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार 18 वर्ष से कम आयु के लगभग 22 फीसदी बच्चे मोटापे की गिरफ्त में हैं। जीवनशैली से जुड़े रोगों के बारे में इतना कुछ लिखा-कहा जा चुका है कि उनके बारे में कुछ कहना नसीहत देने जैसा लगता है। इससे जुड़ा दूसरा पहलू खुद जीवनशैली है। क्या हमने पाश्चात्य जीवनशैली अपनाकर उनकी बीमारियों को भी आमंत्रण दे दिया है? दरअसल, हमें ग्लोबल और लोकल के बीच संतुलन लाना होगा, तभी ज़िंदगी में भी संतुलन आएगा। आहार विशेषज्ञों का कहना है कि सेहत के लिए वह एकदम ठीक होता है, जो हमारे आसपास पाया जाता है। आसपास उगने वाले फल, सब्जियां और अनाज की प्रकृति वही होती है, जो हमारे शरीर की होती है। वह या तो वही जन्मा होता है या वहां पल-बढ़ रहा होता है। हम प्रकृति और व्यक्ति के बीच हार्मोनी की बात करते हैं तो उसका एक पहलू यह भी है। जब हम फास्ट फूड अपनाते हैं तो अन्न के मामले में स्थानीयता से कट जाते हैं। इसी तरह एसी आता है तो बाहर की प्राकृतिक हवा का रास्ता बंद हो जाता है। नए-नए पेय, परिवेश के लिए अजनबी आयातीत फल व सब्जियां हम बिना किसी पड़ताल के अपना लेते हैं। क्या एक अध्ययन इस पर नहीं होना चाहिए कि इनका हमारी सेहत पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

इसी तरह ऑनलाइन शॉपिंग तथा ऑनलाइन भुगतान जैसी आधुनिक और उन्नत तकनीक ने निश्चित रूप से हमारे लिए जीवन को आसान बनाया है लेकिन, इसकी वजह से महानगरीय जीवनशैली वाले युवाओं की अब शारीरिक सक्रियता कम हुई है। स्वस्थ जीवनशैली (समय पर सोना तथा जागना, समय पर भोजन, उपयुक्त व्यायाम, तनाव से बचाव) ही अच्छी सेहत का राज है।

क्लिक एंड शेयर

बच गए वो सह लिए जिसने
तेरे जुल्म-ओ-सितम
मिट गए वो जिस पे तेरी
मेहरबानी हो गई
-मजरूह सुल्तानपुरी

ग़ैरों की बात छोड़िए,
ग़ैरों से क्या गिला
अपनों ने क्या दिया हमें,
अपनों से क्या मिला
-कैफ़ी आज़मी

दैनिक भास्कर

वेब भास्कर

पैशन... अपने प्रोजेक्ट के लिए क्लिक करते हैं एयरपोर्ट टर्मिनल के एरियल फोटोग्राफ

यह फोटोग्राफ लॉस एंजिलिस इंटरनेशनल एयरपोर्ट (एलएएक्स) के टर्मिनल 4,5, 6 और 7 का है। फोटोग्राफर माइक केली ने अपने प्रोजेक्ट 'लाइफ साइकल' के लिए हेलिकॉप्टर हायर किया और एलएएक्स, द साउथ कैलिफोर्निया लॉजिस्टिक्स एयरपोर्ट, सिएटल बोइंग फील्ड और विक्टरविले बोनयार्ड एयरपोर्ट के एरियल फोटोग्राफ क्लिक किए। एयरपोर्ट के लिए मार्केटिंग कैंपेन की फोटोग्राफ क्लिक करने के दौरान उन्होंने अपने इस निजी प्रोजेक्ट के लिए अनुमति ली, क्योंकि इन जगहों पर फोटोग्राफी करने की अनुमति नहीं होती है। इससे पूर्व 2014 में माइक द्वारा क्लिक किए गए एलएएक्स एयरपोर्ट में विमानों के टेक ऑफ के कम्पोजिट फोटोग्राफ चर्चित हुए थे। • mymodernmet.com

आर्ट... माइकल एंजेलो की कृतियों की सबसे बड़ी प्रदर्शनी

इटली के 15वीं-16वीं सदी के महान शिल्पकार, चित्रकार और वास्तुविद माइकल एंजेलो की एक विशाल प्रदर्शनी न्यूयॉर्क के मेट्रोपोलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट में शुरू हुई है। यह पहली बार है कि इस महान कलाकार की कृतियां इतनी बड़ी संख्या में एक जगह प्रदर्शित की गई है। 'माइकल एंजेलो : डिवाइन ड्राफ्टमैन एंड डिज़ाइनर' नाम की इस प्रदर्शनी में उनकी 133 ड्राइंग, संगमरमर के तीन शिल्प, उनकी शुरुआती पेंटिंग और एक लकड़ी का आर्किटेक्चरल मॉडल शामिल है।

खास बात है कि इनमें से कई कृतियां ऐसी हैं, जो पहले कभी एक साथ देखी नहीं गई। प्रदर्शनी के लिए अमेरिका और यूरोप के सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के 50 संग्रहों से ये कृतियां जुटाई गईं। इनमें से कई तो उनकी महानतम कृतियों में से हैं। अपने डिज़ाइन, ड्राइंग पावर, शिल्पों और आविष्कारों के लिए जीवनभर सराहे गए माइकल एंजेलो ने सारी कलाओं के लिए आधारभूत काम किया। उन्हें उनके समकालीन इल डिविनो यानी 'डिवाइन ओनली' कहते थे। इसमें उन्होंने अपने मित्र टोमासो डि कावालियरी के लिए बनाई गई ड्राइंग की सीरीज और वेटीकन के लिए बनाया गया अंतिम भित्तीचित्र भी है। शो में माइकल एंजेलों के शिक्षकों, सहयोगियों, शिष्यों और अन्य कलाकारों की कृतियां भी प्रदर्शित हैं, जिन पर उनका प्रभाव रहा अथवा जिन्होंने उनके साथ मिलकर काम किया था। • travelpulse.com

इनोवेशन... चूहों की मदद से अफ्रीका के जंगलों में नष्ट की जा रही हैं लैंड माइंस

किसी चूहे द्वारा हाथी या शेर को बचाए जाने की बात आपने किस्से-कहानियों में ही सुनी होगी। लेकिन अफ्रीकी जंगलों में यह कहानी सच बनकर उभरी है। दक्षिण अफ्रीका, मोजाम्बिक और जिम्बाब्वे में फैले दुनिया के सबसे बड़े संरक्षित क्षेत्र लिम्पोपो ट्रांसफ्रंटियर पार्क में माइंस के जाल को खत्म करने के लिए चूहों की मदद ली जा रही है।

जिम्बाब्वे के रक्षा मंत्रालय ने इन बारूदी सुरंगों को खत्म करने की जिम्मेदारी एक संस्था को सौंपी है। ये संस्था चूहों को माइंस पहचानने

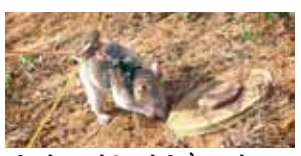

की स्पेशल ट्रेनिंग देती है, इसके बाद साथ में मौजूद टीम माइंस को सुरक्षित तरीके से नष्ट कर देती है। इन चूहों को हीरो रैट्स का नाम दिया गया है। इनका वजन कम होने के कारण माइंस के फटने की आशंका बिल्कुल नहीं होती है। इससे यहां रहने वाले हाथी और बाघ जैसे बड़े जानवरों के लिए यह जगह सुरक्षित हुई है इसके साथ-साथ स्थानीय लोगों के लिए भी खतरा कम हुआ है, जो व्यापार के लिए इन रास्तों से होकर गुजरते हैं। जहां तक चूहों की बात है, संस्था में फिलहाल 300 से ज्यादा चूहे काम कर रहे हैं और इनका पूरा ख्याल रखा जाता है। 20 वर्षों के दौरान इन चूहों ने 1 लाख 6 हजार से ज्यादा माइंस को नष्ट करने में मदद की है। हाल ही में मोजाम्बिक माइंस फ्री होने वाला पहला देश बना है। यहां 22 वर्षों के दौरान 1 लाख 71 हजार से ज्यादा माइंस को नष्ट कर 4200 एकड़ क्षेत्र को सुरक्षित बनाया गया है। • goodnewsnetwork.org

हैप्पीनेस... चार साल पहले गुजर गए थे पिता, जन्मदिन पर पत्र से चकित रह गई बैली

ब्रिटेन के नॉक्सवील, टेनेसी की बैली सेलर्स के 17वे जन्मदिन के एक माह पहले उसके पिता माइकल पैनक्रियाज के कैंसर से चल बसे। लेकिन दुनिया से विदा होने के पहले माइकल ने अपनी बेटी के हर जन्मदिन पर उसके साथ रहने का रास्ता निकाल लिया था।

माइकल जानते थे कि भविष्य में शारीरिक रूप से तो बेटी के साथ रह नहीं पाएंगे, इसलिए उन्होंने ऐसी व्यवस्था की हर साल 21 वर्ष की आयु तक जन्मदिन पर बैली को फूलों का बुके और कार्ड मिले। पिछले हफ्ते बैली 21 साल की हो गई और उसे अपने डैड से अंतिम बुके मिला, जिसमें उनका प्यार भरा खत भी था। इसमें अंतिम गुडबाय के साथ बेटी को यह भी याद दिलाया है कि एक दिन वे फिर मिलेंगे। यह साल बैली के लिए बहुत भावनात्मक था, क्योंकि यह पिता का अंतिम तोहफा था। उसने कहा- 'मैंने जब तोहफा खोला तो मैंने उनकी मौजूदगी महसूस की। यह खुशी के साथ उदास कर देने वाला अहसास था।' उसने सुंदर फूलों के बुके, दिल को छू लेने वाले पत्र और बीच पर पिता के साथ उसका बचपन का फोटो सोशल मीडिया पर शेयर किए। इस बार के कार्ड में माइकल के दिल को छू लेने वाले शब्द थे, 'यह तुम्हें मेरा अंतिम पत्र है, जब तक कि हम फिर नहीं मिलते। इसके बावजूद मैं जीवन के हर मोड़ पर तुम्हारे साथ रहूंगा। सिर्फ मुड़कर देखना और तुम मुझे पाओगी।' बैली ब्रिटिश ब्रैकफास्ट शो 'गुड मॉर्निंग ब्रिटेन' पर भी दिखाई दी। नॉक्सविल से उसे लाइव दिखाया गया था। • boredpanda.com

मानव ने आत्मा से संचालित मन को संसार से जोड़ रखा है और शरीर को ईश्वर पूजा के नाम पर कुछ रस्मों-रिवाज से जोड़ रखा है। यह गलत कनेक्शन ही सारी समस्याओं की जड़ है

मन को संसार और शरीर को रस्मों से जोड़ना ही समस्या

▪ सतगुरु माता सविंदर हरदेव
संत निरंकारी मंडल

यदि आज की जरूरत शांति आधारित तरक्की की है तो ईश्वर के वास्तविक ज्ञान के साथ आध्यात्मिक जागरुकता लानी होगी। वैज्ञानिक ढंग से बात करें तो मानव पांच तत्वों का बना है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और छठी है चेतना। पहले पांच तो शरीर के घटक तत्व हैं जबकि छठी चेतना की इकाई है। अच्छी शारीरिक सेहत को बनाए रखने के लिए मानव शरीर अपनी भौतिक जरूरतों की पूर्ति शरीर के बाहर काम करके पंच तत्वों के पूरक पदार्थों से कर लेता है। जैसे किसी महंगे वाहन के टायर में चारों ओर मौजूद निःशुल्क हवा का महत्व होता है, उसी तरह ये पंच तत्व भी मानव शरीर के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और आसानी व प्रचुरता से उपलब्ध हैं। इनकी कमी से शरीर में रोग पैदा हो जाते हैं अथवा उसका संतुलन बिगड़ जाता है। लेकिन, एक तत्व की कमी की पूर्ति किसी दूसरे तत्व से नहीं की जा सकती। जैसे पानी की पूर्ति शेष चार तत्व नहीं कर सकते।

ठीक उसी तरह चेतना की एकल इकाई की सर्वव्यापी मुख्यधारा ईश्वर भी मानव शरीर के चारों ओर मौजूद है। आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए चेतना की व्यक्तिगत इकाई को सतत ईश्वर के संपर्क में रहना होगा। जब यह संपर्क बरकरार नहीं रखा जाता तो मन में उथल-पुथल रहेगी अथवा डिप्रेशन रहेगा। चेतना की मुख्यधारा आसानी से और तत्काल साझा की जा सकती है। इस वास्तविकता की जीवंत अनुभूति मानव जीवन की पूर्णता के लिए अपरिहार्य है। जैसाकि पहले कहा गया है कि जल की पूर्ति अन्य तत्वों से नहीं हो सकती, उसी तरह व्यक्तिगत चेतना (आत्मा) का ब्रह्माण्डीय चेतना (परमात्मा) से संपर्क के अभाव की पूर्ति किसी और चीज से नहीं की जा सकती। इस तरह शरीर को दुनिया से तो आत्मा को ईश्वर से जोड़ना है। लेकिन, इसके विपरीत मानव ने आत्मा से संचालित मन को सांसारिक दुनिया से जोड़ रखा है और शरीर को ईश्वर पूजा के नाम पर कुछ रस्मों-रिवाज से जोड़ रखा है। इस गलत कनेक्शन के कारण सफेद प्रकाश की तरह मानव के प्रिज़्म के कारण वह कई रंगों के टुकड़ों में बंट जाता है। ज्ञान के अभाव में ईश्वर अलग-अलग व्यक्तियों के लिए अलग-अलग होता है। यहां तक कि एक ही व्यक्ति के लिए अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग होता है।

जीवन यात्रा

ईश्वर के एक होने के विचार में सभी के लिए एक ही धर्म निहित है, जो पूरी मानव प्रजाति के लिए योग्य है। अलग-अलग धर्मों की अलग-अलग रस्मों, क्रियाओं, विधियों के जंजाल में धर्म अपनी गंभीरता खो बैठा है। एकजुटता लाने की बजाय यह खुद ही विभाजन की बड़ी शक्ति बन गया है। अतिमानव की ज़िंदगी जीने के प्रयास में मनुष्य मानवता से नीचे के स्तर पर चला गया। ईश्वर की अनुभूति एकमात्र शक्ति है, जो मानव समाज की भिन्न आकारों की ईंटों को समांगी संरचना में जोड़ सकती है। यह एकता में अनेकता को रेखांकित करती है, जो धर्मों के बीच सौहार्द की जरूरत है। ईश्वर अनुभूति प्राप्त व्यक्ति का एक ही सिद्धांत होता है, 'सब ईश्वर का और सबके लिए है।'

वह मानता है कि मानव की सभी भौतिक और मानसिक असेट ईश्वर की है और हम केवल इसके ट्रस्टी हैं। इस तरह वह इसका इस्तेमाल पूरी मानव प्रजाति के भले के लिए करने हेतु प्रतिबद्ध होता है। निरंकारी साधना में मानव को मानव से अलग करने वाली सारी दीवारों को ईंट-दर-ईंट अलग करके दूर कर दिया जाता है। इस तरह मानव जाति, रंग, नस्ल आदि रूढ़ियों से मुक्त हो जाता है। वह दूसरों के खान-पान, रहन-सहन और संपूर्ण जीवनशैली के प्रति सम्मान रखने लगता है। सहिष्णुता के गुण के साथ ऐसा व्यक्ति आत्म-निर्भर, सौदेश्यपूर्ण पारिवारिक जीवन बिताता है और समाज में व्यवस्था कायम रखता है।